International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1079-1080

नेहरू का समाजवादी पति के समाज का विचार एवं उनकी प्रांसगिकता

Dr. Mamta Rani
Head, Department of Pol Science, B.A.R.J. College Kaul, Kaithal, Haryana, India

प्रस्तावना

भारत के प्रथम प्रधनमन्त्री, पंडित ज्वाहरलाल नेहरू की बहुमुखी प्रतिमा थी। वे राष्ट्रीय आन्दोलन के हीरो थे। भारतीय संविधान के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे आधुनिक भारत के निर्माता थे।[1] उन्होंने भारत में प्रजातन्त्रा के संस्थायीकरण में, योजना और विकास में तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके इन पक्षों पर काफी अध्ययन हुए हैं। लेकिन इस बात के बावजूद उनका आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन में महत्वूपर्ण योगदान रहा। शुरू से ही उन्होने राजनीति स्वतन्त्राता के साथ आर्थिक स्वावलम्बन और बौद्धिक विकास को नत्थी करने का प्रयास किया। नेहरू देश को एक चतुर कर्णधर की तरह, लोकतन्त्रा और समाजवाद की दिशा में खेते रहे। स्वतन्त्राता भारत में उन्होने कल्याणकारी राज्य की नीव डाली। लेकिन हमें स्मरण रखना होगा कि नेहरू एक राजनीतिज्ञ थे। राजनीतिक दार्शनिक नही।[2] उनकी चिन्तन शैली, कार्य करने के ढंग से उनकी व्यवहारिक बुद्धि का संकेत मिलता हैं उनके इस पक्ष की और पर्याप्त ध्यान नही। दिया गया हैं इस प्रंसग में उनका एक ही बहुत ही महत्वपूर्ण विचार समाजवादी पद्धति के समाज के निर्माण को माना जा सकता है। इस पर चर्चा करने का प्रयास इस शोध पत्र मे किया जा रहा है।

इस सन्दर्भ मे कई प्रश्नो के उत्तर देना महत्वपूर्ण हो जाता हैं

1. सर्वप्रथम, कि उन्होंने समाजवाद की बजाय समाजवादी पद्धति के समाज की बात क्यो की ?
2. दूसरा, कि इस विचार की मुख्य बाते क्या है ?
3. तीसरे, कि इसमें और समाजवाद में क्या अन्तर है ?
4. चौथे, कि उन्होंने इसे साकार करने के लिए क्या प्रयास किये गये ?
5. पांचवे, कि ये प्रयास कहाँ तक सफल हुए ?
6. छठा, कि क्यों सफल नहीं हो पाये ?
7. सातवें, उनके इस विचार की आज के सन्दर्भ में क्या प्रासंगिकता हैं ?

1. वस्तुतः नेहरू समाजवाद की स्थापना के उस समय ही पक्ष घर हो गये थे जब उन्होंने 1928 में सोवियत रूस की यात्राा की। वहाँ जाकर उन्हें पता लगा कि कैसे समाजवाद के मार्ग पर चलकर रूस जैसा पिछड़ा हुआ देश एक महान शक्ति बन गया वे इस बात से खासतौर पर प्रभावित थे जहां यूरोप और अमेरिका के देश अपने आप को Great depression अर्थात् 1930 की मन्दी से नहीं बच पाये थे। रूस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। 1955 में अवाड़ी कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका समाजवाद रूसी या अन्य देशो का अनुकरण नहीं है। समाज का अर्थ धन का वितरण नहीं और न ही केवल जन कल्याणकारी राज्य का निर्माण है। समाजवादी अर्थ व्यवस्था मात्रा से ही लोकल्याणकारी राज्य की स्थापना संभव नहीं आवश्यकता इस बात की है कि देश का उत्पादन बढ़ाया जाए, धन में वृद्धि हो, अर्जित धन का वितरण किया जाए,[3] दूसरे नेहरू समाजवाद के पक्षघर इसलिए हो गये थे क्योकि असहयोग आन्दोलन की असफलता के बाद उन्हे लगा कि राष्ट्रीय आन्दोलन को पूंजीवाद और सामतवाद के विरूध आन्दोलन से जोड़ना होगा। मजदूरी और किसानो की लामबन्दी (Mobilization) करनी होगी और ऐसा करने के लिए समाजवाद के दशर्न का प्रयोग करना होगा। नेहरू के शब्दों में संसार की एव भारत की समस्याओं का समाधन केवल समाजवाद द्वारा ही सम्भव है। में इस शब्द का प्रयोग मानवीय नाते से नहीं बल्कि वैज्ञानिक आर्थिक दृष्टि से करता हूं किन्तु समाजवाद आर्थिक सिद्धान्त से अधिक महत्वपूर्ण है। समाजवाद एक जीवन दर्शन है मेरी दृष्टि से में निर्धनता, फैली बेरोजगारी, भारतीय जनता का अध पतन, दासता को समाप्त करने का मार्ग समाजवाद को छोड़कर अन्य किसी प्रकार से सम्भव नही,[4] किन्तु कांग्रेस पार्टी के दक्षिण पन्थी नेताओं, सरदार पटेल आदि के विरोध के कारण गांधी जी के आग्रह पर उन्होंने कांग्रेस की एकता बनाए रखने के लिए समाजवाद को ठण्ड़े बस्तें मे डाल दिया गया। तीसरे संविधान निर्माण के समय भी वे समाजवाद शब्द को संविधान में उन्हीं के विरोध के कारण डाल नहीं पाये। इसलिए उन्होंने शब्द जाल का प्रयोग करते हुए चतुराई से समाजवाद की बजाए समाजवादी पद्धति के समाज की स्थापना की बात की।

2. नेहरू के समाजवादी पद्धति के समाज की प्रमुख बातें निम्नलिखित हैं।[5]

(क) योजनाए एंव आर्थिक विकास
(ख) पब्लिक सेक्टर को प्राइवेट सेक्टर की बजाए अधिक महत्व देना और भारी उद्योगो की स्थापना पब्लिक सेक्टर में करना।
(ग) जमीदारी प्रथा का उन्मूलन।
(घ) मजदूर आन्दोलन को बढ़ावा।
(ड) मुजारो की बेदखली को रोकना।
(च) सहकारी खेती को बढ़ावा।
(छ) आर्थिक असमानाताओं को कम करना इत्यादि।

3. समाजवाद के सिद्धान्त और नेहरू के समाजवादी पद्धति के समाज में वस्तुतः मात्राात्मक अन्तर है न कि गुणात्मक। वस्तुतः नेहरू इस नये शब्द की आड़ में समाजवाद पद्धित स्थापित करना चाहते थे। किन्तु नेहरू ने राजनीतिक कारणो से न तो निजि क्षेत्रा को समाप्त किया, न ही भूमि पर जमीदारों के स्वामित्व को खत्म करके भूमिहीन किसानों को जमीन का मालिक बनाया, न ही पूंजीपतियों के उद्योगों को मजदूरों के हाथ में सौंपा। वास्तव में राजनीतिक मुश्किलों के चलते नेहरू धीरे–धीरे समाजवाद लाना चाहते थे। दूसरे ये प्रजतांन्त्रिाक ढंग से मिश्रित समाजवाद लाना

चाहते थे। तीसरे वे समाजवाद लाने के लिए अनुकूल वातावरण स्थापित करना चाहते थे।

4. जैसे कि पहले ही बताया जा चुका है कि नेहरू ने समाजवादी पद्धति के समाज के निर्माण के लिए सबसे पहले अपने द्वारा प्रस्तुत किये गये और संविधान सभा द्वारा पास किये गये उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Resolution) में समाजवादी तत्वों का समावेश किया।[6] दूसरे संविधान की 'प्रस्तावना' में उन्होंने आर्थिक व सामाजिक समानता और न्याय की अवधरणाओं को शामिल किया।[7] तीसरे राज्य नीति निर्देशक सिद्धान्तों में समाजवादी आदर्शों को शामिल किया गया। चौथे भूमि की अधिकतम सीमा 30 एकड़ रखी गई और फालतू जमीन मुजारो में बांटने के लिए कानून बनाये गये। पाचवाँ उन्होंने कृषक सहकारी समीतियों, मजदूर सहकारी सीमतियों का निर्माण करने का प्रयास किया। उन्होंने बैंको पर नियन्त्राण करने के लिए रिजर्व बैंक आफ इण्ड़िया की स्थापना की। और स्टैट बैंक का निर्माण किया। मजदूरो को उचित वेतन दिलाने के लिए श्रमिक अधिकरणो की स्थापना की।[8]

5. समाजवादी पद्धति की स्थापना के नेहरू के प्रयास अधिक सफल नहीं हो पाये। भूमि सुधर भी सही ढंग से लागू नहीं हुए। आर्थिक विशमताएँ भी बढ़ती गईं भूमिपतियों और पूँजीपतियों की आर्थिक व राजनीतिक शंक्तियों में भी निरन्तर वृद्धि होती रही। सहकारी आन्दोलन पर और पंचायती राज सस्थाओं पर भूमि पतियो का अधिपत्य हो गया। राज्य सरकारो में भी उनका प्रभाव बढ़ा और राष्ट्रीय शक्ति संरचना में बड़े–बड़े औद्योगिक घरानें जैसे कि बिरला, टाटा इत्यादि हावी हो गये।

6. नेहरू समाजवादी पद्धति के समाज निर्माण में कई कारणो से सफल नहीं हो पाया प्रथम ये कि केन्द्र की कांग्रेस सरकार में राम सुभाग सिंह मोरार जी देसाई जैसे नेता मौजूद थे। जोकि पूँजीपतियों और भूमिपतियों के समर्थक थे दूसरे भारत में किसान आन्दोलन व मजदूर आन्दोलन कमजोर रहे। तीसरे समाजवादी दल और साम्यवादी दल नेहरू का साथ देने की बजाय उसका विरोध करते रहे। चौथे राज्यस्तर पर मुख्य मंत्रियों ने भूमि सुधर निष्ठापूर्वक लागू नही। किये क्योकि अधिकतर राज्यों में भूमिपति जातियों के मुख्यमंत्री थे पांचवां ये कि नेहरू का अपना रवैया भी ढुलमुल रहां उनके लिए समाजवाद पद्धति के समाज के निर्माण की तुलना में सता में रहना अधिक महत्वपूर्ण था

7. नेहरू ने समाजवादी पद्धति के समाज का विचार उस समय दिया। जब विश्व दो भागो मे बटा हुआ था। पूँजीपति देश जिनका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था और साम्यवादी देश जिनका नेतृत्व सोवियत संघ में था। उस समय गुट निरपेक्षता का मार्ग अपना कर और शीत युद्ध का लाभ उठा कर नेहरू ने भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए और समाजवादी पद्धति के समाज के निमार्ण के लिए केंद्रित नियोजन शुरू किया। उस समय की परिस्थितियाँ सहायक थी। लेकिन 1980 के दशक में सोवियत संघ के बिखर जाने के बाद पूर्वी यूरोप मे साम्यवाद समाप्त होने के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका एक मात्रा शक्ति बन गया और उसी के प्रभाव में विश्व बैंक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संघ के दबाव के कारण भारत ने भी नई आर्थिक नीति अपनाई। उदारीकरण निजिकरण, वैश्वीकरण के परिपेंक्षय में नेहरू के विचारो की प्रासंगिकता कम हो गई लेकिन हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि मुक्त बाजार व्यवस्था की स्थापना के बाद समाजवादी विचारो का महत्व और बढ़ गया है। क्योकि गरीब लोग विकास से वंचित हो गये थे, कृषि का संकट पैदा हो गया, शिक्षा, आर्थिक, चिकित्सा आम आदमी के वश में नही। रही ऐसी परिस्थितियों में हमे नेहरू के विचारो को फिर से अपनाना होगा। लेकिन बदली हुई परिस्थितयों में नेहरू के समाजवादी पद्धति के समाज की अवधरणा में परिवर्तन करना होगा।

संदर्भ

1. डॉ0 राध कृष्णन : नेहरू, पृ0 7।
2. डॉ0 अमरेश्वर अवस्थी, डॉ0 राम कुमार अवस्थी : प्रतिनिधि भारतीय राजनैतिक चिन्तक, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, संस्करण 2009 पृ0 201–202।
3. वही, पृ0 210।
4. डॉ0 कुमुद शर्मा : भारतीय राजनीतिक विचारक, पृ0 216।
5. आर सी0 अग्रवाल : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन सरकार तथा राजनीति, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा0) लि0 दूसरा संस्करण, 1975 पृ0 262।
6. एल0 एल0 सीकरी : भारतीय संविधान का इतिहास, एस नगीन एण्ड कम्पनी, प्रकाशक जलान्धर, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1967, पृ0 461।
7. आर0 सी0 अग्रवाल : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन सरकार तथा राजनीति, एस0 चन्द एण्ड़ कम्पनी (प्रा0) लि0 नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 1975 पृ0 16।
8. एल0 एल0 सीकरी : भारतीय संविधान का इतिहास, एस0 नगीन एण्ड कम्पनी, जलान्धार, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1967, पृ0 503–504।